सामान्य विज्ञान

प्रथम परीक्षा

1 लिखित—100
1 क्रियात्मक—100

व्याख्यान—30 प्रदर्शन—20

इस विषय को पाठ्यक्रम में रखने का उद्देश्य परिचारिकाओं को सामान्य विज्ञान के मूलभूत सिद्धान्तों से अवगत कराना है तथा उपकरण आदि के उचित प्रयोग का अवसर प्रदान करना है, जिससे वे परिचर्या कार्य में सम्बन्धित यंत्रादि को भली भांति प्रयोग में ला सकें।

द्रव्य के सामान्य गुण का घनत्व, गुरुत्वाकर्षण, आपेक्षिक घनत्व, भार एवं माप मेट्रिक एवं तत्समकक्ष भारों का तुलनात्मक ज्ञान।

उत्तोलक एवं घिर्री की यान्त्रिक प्रक्रिया, उत्तोलक सिद्धान्त, काशत्य कर्म, यन्त्रों एवं मनुष्य शरीर की गतियों में उपयोग, ट्रेक्शन का अस्थि-भग्न में प्रयोग।

द्रव्य पानी का घनत्व, गलनांक, क्वथनांक, गुप्त ताप, वाष्पन, स्रवण बर्फ जमने की विधि ओटोक्लेव, आधार तनाव, निःसरण, रसावर्षण दबाव, वायुमंडल का दबा', सिरिंज, साइफन, बैरोमीटर, वायुदाब मापक यंत्र, आर्द्रता।

आमाशय एवं आन्त्र यंत्र प्रक्षालन, रक्त चाप, ताप, स्थानान्तरण थर्मस फलास्क, प्रकाश का परावर्तन एवं वर्तन, ताल लेंस के उपयोग एवं नेत्र के दोषात्र प्रकाश की विधियां।

ध्वनि, संगीत ध्वनि, अनुनाद, प्रेषित कम्पन, श्रवण नलिका यंत्र।

भौतिक एवं रसायन परिवर्तन तत्व, योगिक एवं मिश्रण, परमाणु सिद्धान्त का संक्षिप्त परिचय, रासायनिक संयोग के नियम, वायु मन्डल का संगठन, पशु एवं वनस्पतियों के जीवन का पारस्परिक सम्बन्ध आक्सीजन, आक्सी योगिक, उत्प्रेरक, कार्बनिक पदार्थ में कार्बन का महत्व, आक्सीजन एवं आव्वरण आक्सीजन पदार्थ का बिसंक्रमण के रूप में उपयोग, पानी घोलक के रूप में इसका महत्व, शुद्धिकरण, मृदुकरण अम्ल एवं लवण, जलने एवं विष से पीड़ित व्यक्तियों की प्रारम्भिक चिकित्सा में रसायन शास्त्र के सिद्धान्तों का उपयोग।

नाइट्रोजन, नाईक एसिड, अमोनियम, कार्बोहाइड्रेड 'एवं उसका पाचन, वसा उनका पाचन, प्रोटीन एमिनो एसिड, प्रोटीन का पाचन।

शरीर

1 लिखित—100 अंक
1 क्रियात्मक—100 अंक

व्याख्यान—30 प्रदर्शन—20

इस विषय को पाठ्य क्रम में रखने का उद्देश्य परिचारिकाओं को युर्वेद के दोष, धातुमल विज्ञान के सामान्य सिद्धान्तों से परिचय कराना,

है एव स्वस्थमानव के अंगों के सामान्य कर्मो से अवगत कराना है, जिससे उनके विकृत अवस्थाओं को भी समझा जा सके। शरीर रचना के उतने ही अंश का ज्ञान कराना आवश्यक है, जिससे अंगों के कार्यों से परिचय हो सके।

शरीर ज्ञान की आवश्यकता, चैतन्य के लक्षण, पांच भौतिक शरीर पुरुष जीवन या आयु का लक्षण। अधिकृत वात, कफ, पित्त का शरीर धारणत्व, त्रिदोषों के पृथक्-पृथक् कार्य, गुण भेद एवं उनके विकृत होने से उत्पन्न होने वाले विकार लक्षणों का संक्षिप्त एवं सामान्य परिचय। सप्त धातुओं का सामान्य परिचय, रस आदि सप्त धातुओं के कार्य, उनके क्षय के लक्षण, एवं उनके वृद्धि से उत्पन्न होने वाली विकारों का परिचय। शरीर में तीन अग्नियां तथा तीन अवस्थाओं का सामान्य परिचय, शरीर में उप धातु ओज का सामान्य परिचय।

शरीर कोष धातुओं एवं अंगों की रचना एवं कार्यों का सामान्य परिचय

मानव कंकाल अस्थि रचना, वृद्धि एवं भेद।

करोटि स्थिति, करोटि की अस्थियों का सामान्य परिचय।

चेहरे की अस्थियां, नेत्र, गुहा, मुख दांत, नासिका आदि का निर्माण।

पृष्ठ अंश एवं वक्ष प्रदेश कशेरुकों के भेद, पृष्ठवंश, पशुकायें, वक्षोस्थिति, उपर्शूकाविसवन्ध्र प्रदेश, उर्ध्व शाखा की अस्थियों का सामान्य परिचय।

नितम्भ प्रदेश, अधोशाखा की अस्थियों का सामान्य परिचय।

सन्धियों का निर्माण एवं उनके भेद। मुख्य सन्धियों का परिचय।

मांश पेशी का सामान्य परिचय, मांस-पेशियों के रचना की दृष्टि से भेद।

अनैच्छिक ऐच्छिक हृदय मांस, सूत्र शरीर की मुख्य मांसपेशियों का परिचय एवं कार्य।

हृदय की स्थिति रचना, कार्य, हृदय कोष्ठ, हृदय कपाट, आदि। रक्तवाहिनियों के भेद, शिरा धमनी केशिकायें। शरीर की मुख्य-मुख्य धमनी एवं शिराओं का परिचय। रक्त संवाहन, रक्त की रचना, कार्य एव जमाना, नाड़ी रक्त चाप, रसस संवहन संस्थान, संवाहनियां ग्रन्थि। रस की रचना एवं कार्य, यकृत प्लीहा आदि।

स्वास्थ्य वृत्त

1 लिखित--100 अंक
1 क्रियात्क—100 अंक

व्याख्यान—30 प्रदर्शन--15

इस विषय के अध्ययन का उद्देश्य परिचारिकाओं को भारतीय चिकित्सा पद्धति के उपयोगी स्वास्थ्य वृत्त के सिद्धांतों एवं उनके व्यावहारिक लाभप्रद स्वरूप से परिचय कराना है। जो कि अपने देश की सामाजिक परम्पराओं की दृष्टि से महत्वपूर्ण है, इसके अतिरिक्त छात्राओं को स्वास्थ्य विज्ञान एवं रोगी परिचर्या के घनिष्ठ सम्बन्ध को प्रदर्शित कराना है, जिससे व्यक्तियों में स्वास्थ्य जनक व्यवहार करने की जिज्ञासा को उत्पन्न किया जा सके। अध्यापन एवं क्रियात्मक कार्य मे व्यक्तिगत स्वास्थ्य वृत्त के उस पक्ष पर अधिक बल देना है, जिसका आयुर्वेद में महत्व प्रदर्शित किया गया है।

आरोग्य की व्याख्या, रोग के लक्षण एवं कारण, स्वस्थ व्यक्ति के लक्षण प्र० पराध, आरोग्य रहने के सामान्य उपाय।

दिनचर्या, शौच विधि, दन्त शोधन, नेत्र रक्षा, अभ्यांग, स्नान, नस्य आदि। अन्य शारीरिक स्वस्थ बृत, त्वचा, मुख, वर्ण, हाथ, पैर, बालों की रक्षा, वस्त्र धारण आदि।

ऋतु दोष सम्बन्धी ऋतुचर्या

व्यायाम, विश्राम, मनोरंजन, धारणीय एवं अधारणीय वेग, आहार, आहार विधि, विशेष आयतन, आहार काल एवं आहार वेग मात्रा, भोजन के नियम, विरुद्धाहार, भोजन के पश्चात् कर्म आदि, उचित भोजन के आवश्यक अवयव।

निद्रा एवं बलचर्या

जनपदोध्वांस के कारण आयु, जल, देश एवं काल की विकृति एवं उनके रोकने के उपाय।

देश भेद के अनुसार आहार एवं विहार। प्रकाश एवं व्यंजन की उत्तम व्यवस्था के उपाय।

आतुरालय एवं रोगी कक्ष, स्वस्थ रोगी के मानसिक भावनात्मक एवं शारीरिक लाभ हेतु स्वस्थ एवं सुखद वातावरण का महत्व, स्वास्थ्य एवं स्वच्छता के स्तर को स्थापित करना, भोजन, पानी की स्वच्छता, मल–मूत्र कूड़ा आदि का निराकरण।

वातावरण में स्वास्थ्य सम्बन्धी दूषित कारण, जैसे दूषित जल, संक्रमित, सुबमति, दुग्ध, भोजन, निवास सम्बन्धी असन्तोषजनक अवस्थायें, वातावरण अन्य अस्वच्छतायें सुरक्षित वातावरण, जल वितरण,

मलादि का निराकरण, सुरक्षित भोज्य पदार्थ एवं दुग्ध के वितरण, नियमों के हेतु सार्वजनिक एवं सामूहिक प्रयत्नों का अध्ययन, अच्छी नागरिकता की विशेषतायें एवं व्यक्तिगत एवं सार्वजनिक स्वास्थ्य से उनका घनिष्ठ सम्बन्ध ।

क्रियात्मक--

दिवार, लकड़ी, धातु आदि के फर्श एवं शीशे को स्वच्छ रखने के उपाय, बर्तनों की स्वच्छता, मकान के सामान की स्वच्छता ।

मुख्य अस्पतालों में प्रकाश प्रोवेजेन एवं मैले पानी के विकास के प्रबन्धों का अध्ययन, रसोई घर के सामान के प्रयोग, भोजन पकाने तथा उसको सुरक्षित रखने के लिए स्वास्थ्य जनक नियमों की जानकारी ।

रोगी जन स्तरों के मकानों एवं वातावरण से आते हैं, उनके प्रावीजेन आदि के प्रबन्धों की जानकारी ।

वाटरवर्क्स, डेरी एवं सीवेज तथा रीफयूज डिसपोजल प्लान्ट का निरीक्षण ।

जीवाणु परिचय

----

1 लिखित 100--अंक

1 क्रियात्मक—100 अंक

व्याख्यान--20

प्रदर्शन--10

इस विषय का उद्देश्य परिचारिकाओं को जीवाणु विज्ञान का रोगों के विनिश्चय एवं उनके रोकथाम, के सम्बन्ध में अवगत कराना है जिससे दनिक जीवन में स्वच्छता के महत्व को भली भांति समझा जा सके । आरोग्य नाशक जीवाणुओं के सामान्य जानकारी पर विशेष बल देना है ।

रोग के रोक-थाम एवं चिकित्सा कार्य में उपचार का महत्व, जीवाणुओं का परिचय, परिमाण वृद्धि के कारण, सहज एवं विकारण जीवाणु, शरीर में जीवाणुओं के प्रवेश के मार्ग तथा उनके द्वारा होने वाली सामान्य एवं स्थानीय प्रभाव, रोग क्षमता, विभिन्न प्रकार के जीवाणुओं से उत्पन्न होने वाले विशेष रोग, संक्रमण के आश्रय, भूमि, जल, भोजन, दुग्ध सहित । कीट, पशु, मनुष्य, त्वचा, श्लेष्मिक कला मुख आमाशय, नासिका एवं गले के स्राव, थूक घ्राण, रोग के वाहक, उपेक्षित रोगी ।

संवाहन के माध्यम--

व्यक्ति आतुरालय कक्ष का सामान, भोजन, कपड़े, धूल विन्दूत्पोपसर्ग ।

जीवाणुओं का विनाशीकरण, स्टरलाइजेशन आदि, संसर्जन रोगी का नियंत्रण, हाथों की स्वच्छता, कपड़ों की सफाई, दुग्ध भोजन, भोजनालय, शल्य पट्टी, सामान, थर्मामीटर आदि की स्वच्छता, शैयाओं के बीच का अन्तर, मूल पट्टी, बोलने पर नियंत्रण, खांसना, छींकना, धूल से उत्पन्न संक्रमण, शैयाओं के वस्त्र, फर्श आदि की स्वच्छता ।

निदानात्मक परीक्षायें ठ्यूर क्यूलिन परीक्षा, छात्रों की परीक्षा, पैथोलोजी लेब्रोटरी में पालनीय नियम, सूक्ष्म दर्शक यंत्र का उपयोग, विभिन्न प्रकार के साधारण कोषों का ज्ञान, स्टेनिंग का सामान्य ज्ञान, प्रान्तीय प्रयोगशाला का निरीक्षण, जहां पर जल एवं दुग्ध की परीक्षा होती है ।

हाथ धोने की विधि तथा उसकी परीक्षा, गले के स्त्र व से युक्त प्लेट का इनोकुलेशन ।

जीवाणुओं का विनाशीकरण, उबालने से जोथीवलेव, सूर्य रश्मियों की विसंक्रमण शक्ति, जीवाणु नाशक द्रव्य, उनके घोल के प्रतिशत, माज एवं प्रक्रिया काल के अनुसार विनाशीकरण में अन्तर ।

मास्क की क्षमता की परीक्षा, सफाई के उपायों म दक्षता, विसंक्रमण के उपायों का अवलोकन करने हेतु स्थानीय स्वास्थ्य विभाग द्वारा चालू कार्यक्रमों का निरीक्षण ।

सामान्य परिचर्या

१ लिखित—१०० अंक

१ क्रियात्मक—१०० अंक

व्याख्यान—१०० प्रदर्शन—१००

गुणवान, उपस्थाता, (पारिचारिक परिचारिका) के कार्य प्रणाली से अवगत कराना इस पाठ्यक्रम का मुख्य उद्देश्य है जिससे वे परिचर्या के मूलभूत सिद्धान्तों को समझ सके ।

परिचारिकाओं को इस तथ्य का ज्ञान होना आवश्यक है कि अस्पतालों के कार्यकलापों का सामान्य स्वास्थ्य सेवाओं एवं समाज के स्वास्थ्य निर्माण से घनिष्ठ सम्बन्ध है । जिससे परिचारिकाओं का योगदान महत्वपूर्ण स्थान रखता है । छात्राओं को अस्पताल की साज-सज्जा एवं सामान की क्षमतापूर्वक प्रयोग का प्रशिक्षण देना है तथा परिचारिकाओं को भारतीय चिकित्सा पद्धति की उपचार विधि की विशेषताओं से अवगत कराना आवश्यक है ।

प्राचीन भारत में प्रचलित उपचार पद्धति का परिचय, उपस्थाता का महत्व, आयुर्वेद में उपचार का महत्व एवं गुणवान उपस्थाता के लक्षण आदि ।

परिचारिका विधि का सामाजिक सेवाओं में महत्व, उनका अन्य स्वास्थ्य सेवाओं से सम्बन्ध, अस्पतालों की कार्य प्रणाली तथा उनका अन्य सेवाओं से सम्बन्ध ।

रोगी का प्रवेश एवं प्रतिग्रहण, शयन स्नान रोगी का निरीक्षण, कपड़ों की सावधानी, परिचारिका को रोगी के सम्बन्धियों के प्रति सहृद व्यवहार ।

शैया :—

शैया प्रबन्ध—शैयाओं के भेद, गद्दे, तकिए आदि का प्रयोग, रोगी की विभिन्न स्थितियों के लिए पृथक्–पृथक् प्रकार से शैयाओं का प्रबन्ध ।

शैया वाले रोगी की सामान्य परिचर्या, मुख, दांत, नख, बाल आदि का ठीक प्रकार से रखना । शैया पर ही बालों की सफाई, शैया व्रणों को होने से रोकना, वेड मैन आदि का प्रयोग, विश्राम, रेत की पोटली, हाट वाटर बोट, शैया, मेज लोकर चक्र, कुर्सी विभिन्न स्थिति में रोगी को सहारा देना, रोगी को उठाना एवं करवट बदलवाना, रोगी को सुखप्रद नींद लाने के उपाय, रोगी की शान्ति एवं गुप्तता, रोगी कक्ष में सामान्यता ।

बच्चों की रक्षा एवं पालन तथा उनके स्थान एवं दुग्धवान एवं भोजन की व्यवस्था,

तापक्रम, नाड़ी एवं श्वास गति को देखना, थर्मामीटर, रोगी चार्ट का भरना, वार्ड रिपोर्ट, रोग मुक्त व्यक्ति की देखभाल, रोगी को अस्पताल से मुक्त करना ।

ब रित :—

उनके भेद तथा प्रयोग विधि, मुख द्वारा औषधियों का प्रयोग, घर के बने सामान की रक्षा एवं सफाई, अन्य गृह सामग्री को उचित रूप से संचित करना एवं प्रयोग में लाना ।

बन्धन :—

भेद, सामान्य भट्ठियों के प्रयोग के नियम, सेन्ट जोन्स एम्बूलेन्स के अनुसार प्राथमिक सहायता का ज्ञान ।

रोगियों का निरीक्षण, रोगी के लक्षण आदि देखने का अभ्यास, पीड़ा एवं उसकी विषेशतायें, जिह्वा, मुख त्वचा की स्थिति, मानसिक स्थिति, रोगी के द्वारा लिए गए एवं निष्कासित तरल पदार्थों की जानकारी, परीक्षा नमूनों का इकट्ठा करना ।

शल्य कर्म से पूर्व एवं पश्चात् रोगी का उपचार एवं देखभाल, रोगी की व्यक्तिगत आवश्यकताओं की पूर्ति, रोगी एवं उनके अभिभावकों को एवं सम्बन्धियों को स्वास्थ्य पूर्ण रहन-सहन की जानकारी देना। रोगियों के प्रश्नों का समुचित उत्तर देना। रोगी के आतुरालय से मुक्त होने के पश्चात व्यवहार में लाई जाने वाली सावधानियां।

रोगी के सहयोग को प्राप्त करने की चेष्टा, मरणासन्न रोगी की देख-भाल, मरने के बाद शव की देख-भाल।

अन्तिम परीक्षा

द्रव्य विज्ञान एवं भैषज्य कल्पना

व्याख्यान—10 प्रदर्शन—30

1 लिखित—100 अंक

1 क्रियात्मक—100 अंक

1—द्रव्यगुण के आधारभूत सिद्धान्तों का संक्षिप्त परिचय। रस गुण, वीर्य, विपाक के सिद्धान्तों का संक्षिप्त ज्ञान, द्रव्यों का दोषों के साथ सम्बन्ध। औषध ग्रहण काल, विरोधी द्रव्य, औषधि देने का समय, अभाव द्रव्य।

2—मुख्य पारिभाषिक शब्दों का अर्थ, ग्रहण लेखन, भेदन, दीपन, पाचन, संघन, स्तम्भन, संशमन, रेचन, अनुलोमन, संसन, शोधन आदि।

3—मुख्य गणोक्त द्रव्यों का ज्ञान, त्रिफला, त्रिगद, त्रिकुट, दशमूल, अष्टवर्ग, पंचतृण, जीवनीयगण आदि।

4—मुख्य बर्कों के सामान्य प्रयोग में आने वाले द्रव्यों का ज्ञान।

5—एलोपैथिक चिकित्सा प्रयोग में आने वाले कुछ मुख्य औषधियों की प्रयोग विधि, गुण एवं धर्म का ज्ञान।

6—रस धातु, उप धातु, विष, उप विष का साधारण, शोधन, मरण, गुणमात्रा आदि का परिचय।

7—औषधियों के देने के मार्ग, विशुद्ध औषधियों, मुख्य कल्प तथा औषधि वितरण का संक्षिप्त परिचय।

भैषज्य-कल्पना (पाक विधि)

1—पंचविधि व क्वाथ:—स्वरस, आर्द्रक तुलसी, वासा आदि। क्वाथ मुनिम्बादि, पुनर्नवादि, तिक्त पंचक, अम्यादि, रास्नादि, मजिस्ठादि, कलक, हिम, पपट, पुथ, पाक, कटका, क्षीरपाक, स्नेहपाक, अवलेह,

आसवारिष्ट, शुक्तसीवरी, कांजी, तुषोदक, शिरका, बति, रसक्रिया, सत्त्व, अर्क, पाक, क्षार, लेव, उपनाह, तेल, चूर्ण, गुग्गुल बटे, मलहर, घृत आदि के निर्माण की विधि एवं प्रयोग विधि से परिचय।

2—आयुर्वेद मतानुसार षडरस भोजन एवं आदर्श आहार, भोजन पकाने की उपयोगिता, विभिन्न पाक विधियों का भोजन के अवयवों पर होने वाला प्रभाव, कक्षीय पथम, पूर्ण एवं तरल, आहार कक्ष में भोजन का संग्रह, वितरण एवं संरक्षण उष्णोदक, षांडजपानीय, पानक, लप्सिका, साबूदाना, यवग, पेया, विलोपी, प्रमथया, कृशरा, मुगदयण सिवथ, यवमन्ड, लाजमन्ड तक तुणडुलेपकल, मुषक्त्या नामन्थ, अन्य कुशरार, मास रस, सहकारस्य, मुनक्का, दाल, खिचड़ी, चाय, काफी, यूषध्र, फलत्रूण, एलल्यू मीना, बल यकृपयूण, वाष्पित, चावल, मतस्य, शावयूण आदि की निर्माण विधि।

3—रोगी के पात्र एवं भोजन की देखभाल, धन एवं द्रव्य पदार्थ के आयुर्वेदिक एवं आधुनिक मान पथय।

विशिष्ट (परिचर्या)

1 लिखित—100 अंक

1 क्रियात्मक—100 अंक

व्याख्यान—100 प्रदर्शन—200

शल्य एवं चिकित्सा उपचार, उपचार विधि का सामान्य परिचय, रोगी के शरीर पर होने वाले प्रभाव, धातु में परिवर्तन, शोथ की उत्पति. संक्रमण स्थानीय एवं सामान्य, रक्त प्रवाह, स्तंवद्ध ता।

सूचीबद्ध प्रढ़िया, इन्जेक्शन, तत्वगत, मांस–पेशी एवं शिरागत, इन्जेक्शन देने की तैयारी करना एवं शिरार मार्ग से तरल एवं औषधियों का प्रयोग करना।

मूत्र शलाका प्रयोग, विभिन्न प्रकार की पकचर विधियों का ज्ञान, मूत्र, मल थूक, शीघ्र शकुनीय द्रव्य रक्त आदि का परीक्षण हेतु एकत्रित करना एवं लेबोरेटरीज को भेजना।

निर्विषत्व, विष हरण, एवं विसंक्रमक विधियों का ज्ञान, शल्य क्रिया सम्बन्धी स्वच्छता, ताप द्वारा निर्विषकरण, पृथ्वीकरण, रोगी को शल्य–कर्म के लिए तैयार करना, शल्यकर्म के पश्चात् रोगी की देख–रेख।

शल्य कमागार उसकी तैयारी, प्रकाश उष्मा, प्रवीजन, साज–सज्जा एवं यंत्र शास्त्र आदि उपचारिका के शल्यकर्मागार में कर्त्तव्य।

निजी निवास स्थान में शल्य कर्म करने की तैयारी।

संज्ञा हरण—

सामान्य स्थानीय एवं अन्य विशिष्ट संज्ञ हरण विधियां ।

फुफ्फुस एवं हृदय रोगों में उपचार की विशिष्टता ।

अस्थि भग्न आदि के रोगियों की देख भाल नेत्र रोग, मूत्र एवं जनन संस्थान सम्बन्धी रोगों में विशेष देख-भाल, ।

विभिन्न प्रकार के शल्य रोगों में पृथक्-पृथक् उपचार विधियां । शल्य कर्मागार में परिचारिका के कर्तव्य ।

गर्भावस्था का सामान्य ज्ञान शिशु, उत्पत्ति से पूर्व स्त्री की देख भाल । गर्भावस्था के सामान्य उपद्रव, प्रसव की तैयारी, सामान्य प्रसव एवं उसकी तैयारी, प्रसव सम्बन्धी अन्य ज्ञान ।

प्रसवावस्था में शल्य कर्म हेतु शल्य कर्मगार की तैयारी, शिशु की देख-भाल एवं रोगावस्था में देख-भाल शिशुओं को दुग्ध औषधियां एवं अन्य पथ्य आदि देने की व्यवस्था ।

व्याधि विज्ञान एवं उपचार

1 लिखित —100 अंक

1 क्रियात्मक—100 अंक

व्याख्यान—100 प्रदर्शन—100

1—व्याधि की परिभाषा—व्याधि के सामान्य कारण, व्याधि प्रकार, व्याधि अधिष्ठान, शारीरिक एवं मानसिक व्याधियां, अविकृत एवं विकृत शारीरिक वातादि दोषों के कार्य उनके प्रकोप के कारण तथा प्रकुपितावस्था में उनके द्वारा उत्पन्न होने वाले रोगों की पृथक्-पृथक् संख्या और द्रव्य विज्ञान ।

2—निदान शब्द का अर्थ—निदानादि पंचविधि, रोग विज्ञान, रोगी की दर्शन, स्पर्शन और प्रश्न आदि द्वारा परीक्षा विधि, रोगी की नाड़ी जिह्वा शब्द स्पर्श, दृष्टि आकृति, मल और मूत्र, इन अंगों की परीक्षा विधि, थर्मामीटर एवं स्टेथिसकोप द्वारा रोग का सामान्य ज्ञान ।

3—चिकित्सा की परिभाषा—चिकित्सा के चार पद तथा उनके लक्षण, चिकित्सा प्रकार, चिकित्सा के पूर्व चिकित्सक का कर्तव्य, चिकित्सक का रोगी के प्रति कर्तव्य ।

4—अनुपान की परिभाषा, अनुपान विधि, अनुपान की मात्रा, विशेष ।

5—अनुपान औषधि मात्रा विधि—शिशु भैषज परिभाषा, औषधि सेवन काल ।

6—स्नेहन, स्वेदन, वमन, विवेचन, निरहवस्ति, अनुवासन, वस्ति, उत्तर वस्ति, अंजन, धूम्रपान, गन्डस, आश्योतपन, लंधन और वृहणादि का ज्ञान ।

7—ज्वर, अतिसार, गृहणी, अर्श, अग्नि मार्थ, विसूचिका, कामला रक्तपित्त, राज्यक्षमा, कोस, हिनका, श्वास, अरुचि, छर्दि, अतिन्द्रा, भ्रम, मूर्छा, अपस्मार, विवन्ध वातव्याधि, आमवत, शूल गुल्म, मूत्र कुच, धमेह, शोथ, पूयमेह, उपदश, दद्रु, पामा, विसर्प, विस्फोटन, प्लेग, मुख रोग, कर्णरोग प्रतिश्याय, शिरारोग, नेत्र रोग, प्रदर सूचिका, रोग बालकों की कुक्कर खांसी एवं पसली के रोगी के पूर्व रूप सामान्य लक्षण तथा सामान्य चिकित्सा विधि, घरेलू उपचार एवं पथ्य विधि ।

8—अरिष्ट लक्षणों का सामान्य ज्ञान ।

मानस रोग परिचर्या

1 लिखित—100 अंक
1 क्रियात्मक—100 अंक

व्याख्यान—50 प्रदर्शन—70

आयुर्वेद मे मन की परिभाषा,—कार्य, मन का जीवन से घनिष्ठ सम्बन्ध, मानसिक दोष प्रज्ञापराध आदि ।

सतत परीक्षा सत्तव भेद, सात्विक राजस, तामस मानसिक प्रकृतियां, आयुर्वेद में वर्णित मानसिक रोगों का सामान्य परिचय, अपस्मार, उन्माद, निन्द्रानाश, मद, अतत्वनिवेंश, मूर्छा, सन्यास आदि का सामान्य ज्ञान।

मानसिक रोगी के प्रतिशोध के आयुर्वेद में वर्णित उपायों का उल्लेख, आधुनिक मनोवज्ञानिक के प्रारम्भिक सिद्धान्तों का सामान्य परिचय आधार भूत इच्छायें, व्यक्ति भद, बुद्धि विचारन, उपार्जित व्यवहार, आदत, प्रशिक्षण, कुशलता, चरित्र सीखना, विवेक ।

चेतना, अर्द्धचेतन एवं अचेतन, मानसिक प्रक्रियायें ।

व्यक्तित्व एवं उसका विकास, रोगी के मन पर होने वाले प्रभाव, पीड़ा, सामान्य कामों में अरोक, वास्तविकता से दूरी । कुछ मानसिक रोगी का सामान्य परिचय, मुख्य मानसिक रोग, हिस्टीरिया, न्यूरोसिस, चिन्ता मेनिका, चिजोफ्रेनियां आदि । मानसिक रोग से पीड़ित व्यक्तियों की परिचर्या की विशिष्टता, परिचारिका एवं रोगी के सहानुभूति पूर्ण सम्बन्ध ।

व्यावसायिक वृत्त—

बार्ड प्रशासन, निरीक्षण के सिद्धान्त, अस्पताल में कार्य करने की पद्धति, सज्जा सामान प्राप्त करने एवं रखने की पद्धति का ज्ञान ।

परिचारिका के कर्तव्य, नौकरी को प्रार्थना-पत्र भेजने की रीति, व्यावसायिक उत्तर दायित्व, व्यवसाय में उन्नति ।

प्राचीन एवं आधुनिक भारत में परिचर्या, उसका व्यवसाय, संघ, कार्य एवं इस सम्बन्ध में निकलने वाले मासिक पत्र, परिचर्या का अन्तर्राष्ट्रीय संघ, रेडक्रास, पंजीकरण विधान ।

सामान्य परिचर्या प्रशिक्षण का ९ मासीय प्रसूति प्रशिक्षण पाठ्यक्रम

1 लिखित—100 अंक

1 क्रियात्मक—100 अंक

प्रशिक्षण का उद्देश्य—

इस प्रशिक्षण का उद्देश्य सामान्य प्रशिक्षित परिचारिका को निम्न बातों का ज्ञान कराना है :

(1) प्राकृत प्रसव कराने की विधि गर्भिणी तथा प्रसवोत्तर काल की परिचर्या विधि ।

(2) विकृत गर्भ का ज्ञान एवं उपचार विधान ।

(3) आतुरालय तथा स्वास्थ्य केन्द्र में मातृ तथा शिशु कल्याण संबंधी कार्यों का ज्ञान ।

(4) सहायक परिचारिकाओं का पथ-निर्देशन ।

पाठ्य विषय :—

(1) प्रसूति सेवाओं का इतिहास एवं विकास, मातृ एवं शिशु मृत्युदर का ज्ञान एवं महत्व ।

(2) प्रजनन संहति—

(अ) श्रोणिगुहा, योनि, गर्भाशय, बीजवाहोस्रोत, स्तन एवं गर्भ करोटि का ज्ञान ।

(ब) ऋतु, ऋतुचर्या, आर्तवचक्र, आर्तव का स्वरूप, अंतःस्रावी ग्रन्थियों का सामान्य ज्ञान ।

(3) भ्रूणविज्ञान—गर्भ का स्वरूप, लक्षण, गर्भावक्रांति, गर्भसंहनन, गर्भ का पोषण, गर्भ का विकासक्रम, अपरानिर्माण एवं कार्य, प्राकृत गर्भ की मुद्रायें ।

(4) गर्भावस्था में अंगव्यापार—गर्भ के चिह्न, जीवित एवं मृत गर्भ का निदान, अंतःस्रावी ग्रन्थियों का गर्भ पर प्रभाव, दौहृद, गर्भिणी शरीर परिवर्तन (विक्स एवं कन्डु का प्रादुर्भाव) गर्भकालावधि ।

(5) गर्भिणी परिचर्या—गर्भिणी का इतिवृत्त एवं परीक्षा, प्रसव की संभावित तिथि का ज्ञान, रक्त चाप एवं भार का अभिलेख, मूत्र एवं रक्त की परीक्षा, रक्ताल्पता गर्भिणी का आहार ।

(6) प्रसव के पूर्व कर्म--(अ) सूतिका गृह निर्माण, औषधि प्रसवोपयोगी उपकरण, प्रसव का प्रबंध, आसन्न प्रसवा के लक्षण, गृह, प्रसवार्थ माता एवं शिशु के लिये औषधि एवं उपकरणों का पूर्ण ज्ञान, प्रसूता एवं उसके संबंधियों की मनोवैज्ञानिक दृष्टि से तैयार करना ।

(ब) प्रधान कर्म—प्राकृत प्रसव के प्रारम्भ का ज्ञान, गर्भ की तीन अवस्थायें, प्राकृत गर्भ प्रक्रिया, योनि परीक्षा, द्वितीय एवं तृतीय अवस्था का समोपयोजन, जात शिशु की परिचर्या, अपरापातन विधि ।

(7) सूतिका—सूतिका काल, सूतिका परिचर्या, सूतिश्राव:, नवजात शिशु रक्षा विधान, गर्भाशय निवर्तन, स्तनपानविधि, सूतिकोपयोगी सामान्य औषधि, मक्कलशूल ।

(8) यमकगर्भ का निदान, लिंग निर्णय के लक्षण, पुंसवन संस्कार ।

(9) असामान्य गर्भावस्था—गर्भश्राव, गर्भपात, स्थान भ्रष्ट, गर्भावस्था, भ्रूण के विकार, आर० एच० फैक्टर का ज्ञान एवं प्रभाव, रतिण व्याधियां, गर्भोपद्रव (वमन, रक्ताभारधिक्य, शोथ आदि) गर्भाशय, भ्रंश, अर्बुद, रक्तगुल्भ, योनि अर्श, रक्ताल्पता, मुलस्थ जरायु: ।

(10) अप्राकृत गर्भ--गूढगर्भ एवं विभिन्न गतियां, नाभि नाड़ीभ्रंश, गर्भसंग अपत्यपथ। घात. संकुचित श्रोण, तृतीय अवस्था के उपद्रव (रक्तश्राव तथा प्रतिधृत अभिलग्न जरायु:) ।

(11) सूतिका व्यापद--सूतिका ज्वर, स्तनरोग, रक्तश्राव, धनुर्वात, शोथ, अतिसार आदि ।

(12) शिशु—नवजात श्वासावरोध, प्रसवोपघात, जन्मजात, विकृतियां, मातृ दुग्ध के अभाव में शिशु की व्यवस्था, दुग्धशोधन एवं वर्धन के उपाय, सहजाफरंग कुकूणक, अगल्भ शिशु का प्रबंध । व्याधि प्रतिरोध क्षमता के उपायों का ज्ञान ।

(13) शस्त्र कर्म---शल्य के पूर्व प्रधान एवं पश्चात् कर्म का ज्ञान ग्रीवा विस्फारण, विवर्तन, शिरोभेद, सदंश का प्रयोग, गर्भाशय भेदन ।

(14) मातृ स्वास्थ्य सेवायें- ग्रामीण एवं नगरों में चिकित्सा शिविर का ज्ञान, जन्म पंजीकरण, अभिलेखन तिथि, सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक दृष्टि से परिचारिका का महत्व ।

(15) परिवार नियोजन का उद्देश्य एवं विधियां ।

(16) प्रशिक्षण काल में उपचारिका को निम्न प्रायोगिक कार्य करना आवश्यक है :—

(1) कम से कम चार सप्ताह तक प्रसव पूर्व काल तथा 4 सप्ताह प्रसवोत्तर परिचार्या कक्षों में कार्य करना।

(2) कम से कम 5 योनि परीक्षा।

(3) कम से कम 30 गर्भिणी का परीक्षा करना।

(4) कम से कम 20 प्रसव कराना।

(5) कम से कम 20 प्रसूताओं की परिचर्या करना।

(6) कम से कम एक ऐपिनिओटामी (Epeniotomy) करने का अभ्यास।

प्रसव योग्यता एवं प्रशिक्षण अवधि :—

सामान्य परिचर्या प्रशिक्षण परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद ही प्रसूति प्रशिक्षण के लिये प्रवेश किया जायेगा, इसकी अवधि 9 माह होगी। जिसमें कम से कम 70 घन्टे प्रशिक्षण पाना अनिवार्य होगा।

स्थान :—

प्रशिक्षण राजकीय आयुर्वेद महाविद्यालय एवं चिकित्सालय, लखनऊ में होगा।

परीक्षा :—

प्रशिक्षण के नवें महीने के अंत में परीक्षा होगी जिसमें 100 अंक का एक प्रश्न-पत्र तथा 100 अंक की एक प्रयोगात्मक परीक्षा होगी। उत्तीर्ण होने के लिये प्रश्न-पत्र तथा प्रयोगात्मक परीक्षा में पृथक-पृथक 50 प्रतिशत अंक प्राप्त करने आवश्यक होंगे। अनुत्तीर्ण परिचारिका को तीन माह के पुनः प्रशिक्षण के उपरान्त पूरक परीक्षा में सम्मिलित किया जा सकेगा। पूरक परीक्षा में बैठने के लिये अधिक से अधिक तीन बार अनुमति मिल सकती है। कोई परिचारिका व्यक्तिगत परीक्षार्थी के रूप में प्रविष्ट नहीं हो सकती है।

परीक्षा में बैठने के पूर्व परिचारिका को निम्न प्रमाण-पत्र प्रस्तुत करने आवश्यक होंगे :—

(1) सामान्य परिचर्या प्रशिक्षण की अंतिम परीक्षा उत्तीर्ण होने का प्रमाण-पत्र।

(2) प्रशिक्षण काल में 75 प्रतिशत उपस्थिति होने का प्रमाण-पत्र।

(3) केस बुक (Case-Book) पूर्ण होने का प्रमाण-पत्र।